Volume-4, Issue-03, March 2017 ISSN: 2349-7637 (Online)

RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

Research Paper

हिंदी की हाइकु कविताः उत्पत्ति एवं विकास

डॉ. प्रभा शर्मा

सहआचार्य– हिंदी विभाग राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा (राजस्थान)

वर्तमान भौतिकवादी युग की यांत्रिकताने जीवन में एक विचित्र प्रकार कीत्वरा, अफरा-तफरी, आपा-धापी और भागमभाग पैदा की है |परिणाम स्वरूप आज के व्यक्ति के पास पल दो पलचैन से बैठकर सुस्ताने का न समय है और न अपनी बात को अधिक विस्तार से कहने कीफुरसत है | जीवन की नीरस गत्यात्मकता ने कविता का रस सोख लिया है |यों समकालीनविसंगतियां भी कविता को गले लगाने की छूट नहीं देती | इसलिए दीर्घ और शास्त्रीयप्रबंध एवं दार्शनिक चिंतन से युक्त लम्बी कविताओं को पढ़ने के लिए न तो किसी केपास समय है और न चाव-लगाव | दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है किआज कविता अपना मूलरूप खो बैठी है | एक प्रकार से उसने गद्य का चोला पहन लिया है | उसके रचनात्मक उपक्रममें प्रयत्न-लाघव या थोड़े से में बहुत कहने की स्पर्धा ही सर्वत्र परिलक्षित होतीहै | इसलिए तो साहित्य के क्षेत्र में मिनी कहानी, लघु कथा,लघु उपन्यास, उपन्यासिका,मिनी कविता आदि का प्रचलन हुआ है | मिनी कविताओं में भी क्षणिका, कणिका, कैप्सूल कविता,सीपिका,शब्दिका, कनके, मनके,हाइकु आदि लाघ्वाकारी कविता रूपों को अपनाया गया है|वस्तुतः छठे दशक के बाद ही हिंदी कविता में प्रबंधात्मक और महा काव्यात्मक रचनाविधान का अभाव ही रहा है तथा "अरथ अमित आखर थोरे" वाली लघुतमरचनाओं का प्राचुर्य पाया जाता है|

हाइकु मूलतः जापानी काव्य शैली है| छठे दशकमें जापानी भाषा और साहित्य के संपर्क से वहां का यह लघ्वाकारी छंद हिंदी कवितामें चुपचाप सरक आया और धीरे-धीरे उसने अपनी पृथक पहचान बना ली| जापानी भाषा की रूपसंरचना का हिंदी भाषा से पर्याप्त साम्य है और उसकी वर्णमाला में ध्वनियों की सीमितता है| साथ ही उन ध्वनियों का देवनागरी में यथावत उच्चारण संभव है| इसीसे हाइकु हिंदी में सहज ग्राह्य और स्वीकार्य हुआ है |जापानी भाषा मर्मज्ञ एवं भारतीयभाषाओं में हाइकु को प्रतिष्ठित करने वाले डॉ. सत्यभूषण वर्मा ने हाइकु कीपरिभाषा इस प्रकार की है –

"हाइकु शुद्ध अनुभूति की, सूक्ष्म आवेगों की अभिव्यक्तिकी कविता है| प्रकृति के साथ हाइकु का अनन्य संबंध है| हाइकु जीवन के किसी अनुभूतसत्य की ओर इंगित करती हुई सांकेतिक अभिव्यक्ति है| शिल्प की दृष्टि सेहाइकु 5-7-5 वर्णक्रम सेतीन पंक्तियों की सत्रह अक्षरीय कविता है | आकार की लघुता हाइकु का गुण भीहै और यह उसकी सीमा भी है |" [1]

हाइकु का ज़ेन साधना से गहरा संबंध रहा है| हाइकु में कथ्यऔर शिल्प की सादगी, अभिव्यक्ति की सहजता , शब्दों की मितव्ययिता और चराचर जगत केप्रति संवेदना की भावना ज़ेन दृष्टि से उद्भूत है |

हिंदी में हाइकु को लाने का श्रेयअज्ञेय जी को है | सन1959में प्रकाशित उनके काव्य संग्रह'अरी ओ करुणा प्रभामय' में कुछ जापानी हाइकु के अनुवाद हैं और हाइकु से प्रभावित शैली मेंकुछ स्वतंत्र रचनाएं भी हैं | रीवां के आदित्य प्रताप सिंह ने हाइकु को,हाइकु लेखनको एक आंदोलन का रूप दिया है | डॉ. सत्य भूषण वर्मा ने अपने हाइकु-पत्र केमाध्यम से उसे अखिल भारतीय भाषाओं में महत्वपूर्ण स्थान दिया है| उनके हाइकु लघु पत्रमें हिंदी, राजस्थानी, सिंधी,डोंगरी, आदि अनेक भाषाओं के हाइकु तथा जापानी भाषा केअनुवाद भी देवनागरी लिपि में उनके मूल सहित प्रकाशित हुये है | गुजरात के झीनी भाईदरजी,'स्नेह रश्मि' की सन राइज़ेज ऑन स्नोपीकिस्स,भगवत शरण अग्रवाल की ' शाश्वत क्षितिज,'अर्ध्य', ' अकह', ' टुकड़े-टुकड़े आकाश',डॉ. सुधा गुप्ता की,'खुशबू का सफर','लड़की का सपना', डॉ.शैला रस्तोगी की,'प्रतिबिंबित तुम', डॉ. लक्ष्मण प्रसाद नायक की'हाइकु 5-7-5'कमलेश भट्ट ' कमल' द्वारा संपादित ' हाइकु-1989'तथा,सुरेश कुमार की 'जैसे ओस कहानी' आदि रचनाएं हाइकु साहित्यकी श्रेष्ठ उपलब्धियां हैं| रायबरेली के शंभू शरण द्विवेदी 'बंधु' ने हाइकु का मूलउपनिषदों में ढूंढा है और उन्हेंने इसे **त्रिशूल** नाम दिया है | रुड़की के राधेश्याम नेलगभग 4250 हाइकु छंदों में संपूर्ण रामायण की रचना करकेएक अभिनव प्रयोग किया है |

इसके अतिरिक्त डॉ.उर्मिला कौल, सत्यानंद जावा, कमलेश भट्ट'कमल', डॉ. जीवन प्रकाश जोशी, डॉ. सावित्री डागा, डॉ.सूरज,मोतीलाल जोतवाणी, श्याम'निर्मम', डॉ. वेदज्ञ आर्य, रामसनेही ' यायावर', डॉ. सत्यपाल चुघ ने, साहित्यिक दृष्टि सेश्रेष्ठ हाइकुओं की रचना की है |आज हिंदी की समस्त पत्र-पत्रिकाओं में हाइकु का प्रकाशनहो रहा है |

वस्तुतः छठे दशक के प्रारंभ से ही,'हिंदी कविता', 'नई कविता', 'अकविता', ' विचार कविता,'ताजी कविता', 'टटकी कविता' 'भूखी पीढ़ी की कविता', 'युयुत्सा वादीकविता' आदि न जाने कितने नामों के वात्याचक्र में फंस कर रह गई | इस कालखंड मेंकविता के नाम पर प्रचारवादी सपाट बयानी और भाषा में केवल कुत्सित,गर्हित, सड़ांधमारते,फूहड़ शब्द ही अधिक मिलने लगे| वैषम्यपूर्ण सामाजिक स्थितियोंऔर दंभ भरे जीवनादर्शों से, व्यक्ति की टकराहट एवं व्यक्तिगत स्तर पर उससे निपटनेकी आकुलता, अकेलेपन की असमर्थता से उपजी नपुंसक, क्रोधाविष्टता,इस युग की कविता मेंखूब व्यक्त हुई है| शून्य में ललकारते हुए गलीच भाषा के तरकश खाली

करने और बचकानेजीवनानुभवों को व्यक्त करने,वैचारिकता के नाम पर कच्चे-पक्के, उल-जलूल अनुभवों को उगलने को ही कविता का पर्याय मान लिया गया, जिससे कोरी सपाट बयानी हीअभिव्यक्ति का माध्यम बन गई|

इसी कालखंड में हिंदी कविता के रचना संसार का एक छोरऐसा भी था जो चुप रहते हुए भी समझदारी से जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रकृतिके साथ तारतम्यता को प्रश्रय देते हुए युग यथार्थ को वाणी दे रहा था| छायावादीकविता के भस्मावशेषोंसे जो कविता का महल बनाने में अनवरत प्रयासरत था| इसकेअतिरिक्त इसी युग में कविता की पतली सी एक अन्तःधारा भी प्रवाहित होती देखी गई|जिसमें गंगाजल जैसी पावनता, हिमानी की शीतलता और प्रातः वायु की ताजगी तथामन प्राणों की आप्यायित करने वाली सुरभि अन्तर्निहित थी यह धारा ही हाइकुकाव्यधारा है| जिसमें उक्ति का अर्थ निकालने के लिए सहृदय की बुद्धि को खुरचना नहींपड़ता और ना ही बौद्धिक द्रविण प्राणायाम ही करना पड़ता है| जिससे साधारणीकरण केसिद्धांत को नकारा नहीं गया है| यह कविता शब्द के अनुशासन में नियंत्रित, छंदों के घेरेमें मर्यादित, मंत्र जैसी शक्ति से अभिमंत्रित, सहज सम्प्रेषणाय तथा भावों को जगानेमें समर्थ है| जिसमें कुत्सित और भदेस को कहीं स्थान नहीं, जिसमें प्रकृति की नानाछवियों की मनोयुग्धकारी साज-सज्जा एवं सुषमा है तथा संवेदना संप्रेषण के लिएशिष्ट भाषा का प्रयोग है| यहां सीमित शब्द योजना तथा बिंबो एवं प्रतीकों के माध्यम सेगहन अनुभूति एवं सूक्ष्म सत्यों का उद्घाटन किया गया है|

मानव जीवन के शाश्वत सत्य कोसंकेतित करने वाली इस कविता में एक विशिष्ट प्रकार का सौंदर्य बोध है जो,प्रकृति के समस्त वैभव को अपने में समाहित किए हुए है| साथ ही श्रेष्ठ जीवनमूल्यों को समर्पित संवेदनशीलता भी है जो साहित्य का सच्चा आनंद देती है औरमन को अच्छे संस्कार प्रदान भी प्रदान करती है| मकरंद की बूंदों के समान रसपेशलता और मिठास से भरी यह छोटी-छोटी कविताएं अपने में आनंद के सागर को छुपाए हुए हैं|

हिंदीहाइकु का कथ्य अपना है क्योंकि सर्जन के प्राणवंत क्षणों में कलाकार अपने ही देश कीमिट्टी पर अपने ही देश के आसमान के नीचे रहता है और अपने ही देश की वायु उसके प्राणों में प्रवेश करती है | अतः यह सुशोभन और स्वाभाविक है कि वह अपने देश कीअंतरात्मा के चिर-सत्य को वाणी दे| इसलिए आज का हिंदी हाइकु काव्य जापानी हाइकुकविता की अंधानुकृति नहीं है,उसने हिंदी के व्यापक क्षितिज को समेटने की चेष्टाकी है| दिशा,काल ,संस्था और देश की सीमा को लांघती हुए हाइकु की धारा हमारेसाहित्य के क्षेत्र को परिसिंचित करके सर्सप बना रही है|

प्रकृति की नानाछवियों,ऋतुओं के बदलते रूप-रंग और परिवेश एवं उससे संपृक्त मानवीय संवेदनाओं की सशक्तअभिव्यक्ति हाइकु की अपनी विशेषता है| वासन्ती ऋतु में मदमाती बासंती प्रकृति और फूले पलाशवन की सौन्दर्य श्री का चित्रण करते हुए हायकुकार लिखते है –

फूला पलाश
यादों के दीप जला
आया बसंत[2]

हाइकु में कहे गए का महत्व इसलिए अधिक है कि, वह बहुत कुछ 'अनकहे' की भूमिकाभी प्रस्तुत करता है और संप्रेषण के बाद वह 'अनकहा' होकर भी 'कहा गया' हो जाता है| रीतिकालीन कवि बिहारी ने 'गागर में सागर' भरने के लिए 48 मात्रा के दोहा छंद को चुनाथा| परंतु इससे भी आगे हाइकु रचनाकार केवल 17 अक्षरीय कवितामें सागर लहरा देता है देखें-

छप्पर चूये
भीगे गोदी में शिशु
मां के आंसू[3]

ज्ञानियों ने पिंड में ब्रह्मांड, अणु में परमाणु, जीव मेंब्रह्म और आत्मा में परमात्मा के निवास का कथन भांति-भांति से किया है | हाइकुकारइस तथ्य को अपनी शैली में यूं व्यक्त करता है-

ओस की बूंद
समेटे निज में
व्योम विराट[4]

परब्रह्म के पूर्णत्व को वेद के मंत्रों में इस प्रकार व्यक्त किया है –

ॐ पूर्णामिदःपूर्णामिद्म पूर्णात पूर्णमुदच्यते|
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णा वाशिष्यते ||

इसी की काव्यमय झांकी हाइकु में देखिए-

पूर्ण में पूर्ण
जोड़ा, घटाया, गुना
पूर्ण ही रहा[5]

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

21वीं शताब्दी की दहलीज पर खड़ा आज का भारतआंकड़ों की फसल उगा रहा है | आंकड़े नेताओं के इशारे पर जनता को रिझाने के लिएसरकारी मशीनरी तैयार करती है | पर सब झूठे, सब फ़रेबी इस जनता द्वारा, जनता के लिए बनाएगए प्रजातंत्र में,आम आदमी की कोई कीमत नहीं रह गई है |

आंकड़ों भरी
देश की किताब में
जिन्स आदमी[6]

वस्तुतः आज की राजनीति गोरखधंधा ही तो है-

गोरख धंधा
आज की राजनीति
कागज फंदा[7]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है किहिंदी हाइकु ऋतु और प्रकृति तक ही सीमितनहीं है, वरन उसमें एक व्यापक चेतना का समावेश हुआ है | वह मानवीय संवेदना से लेकरभौतिक युग की प्रगति और तज्जन्य विषमताओं तक को व्यक्त करने की क्षमता धारणकर चुका है| परंपरावादी लोग भले ही हाइकु के बीज भारतीय वेद औरउपनिषदों में ढूंढते रहे, परंतु यह ध्रूवसत्य है कि यह जापानी काव्य-विधा हैजो भारतीयध्यान संप्रदाय के धर्मगुरु की चीन में साधना से उपजी है और जापानी साहित्य केमाध्यम से पुनः भारत में आई है | अब तक हमारा साहित्य पाश्चात्य साहित्य से हीप्रभावित, परिचालित होती रही है परंतु अब पूर्व के एक देश जापान की एक काव्य शैलीको अपनाकर हमने साहित्य के क्षेत्र में एक युगांतर प्रस्तुत किया है| आज हिंदी में ही नहीं अपितु हिंदीतर भारतीय भाषाओं में भी हाइकु साहित्य का निरंतर लेखन हो रहाहै और वह उत्तरोत्तर प्रगति पर हैतथा पाठकों की रूचियां इस नव काव्य शैली केप्रति निरंतर प्रवर्धमाना है | काल के सूप से फटकी गई थोथी रचनाएं भविष्य में उड़जायेंगी और 'सार-सार' वाली शेष रह जाएंगी और तब हिंदी कविता का यह अभिनव रूप साहित्यके क्षेत्र में नए वातायन खोलेगा |

संदर्भ

1. डॉ.सत्य भूषण वर्मा,'हाइकु 1989',प्रस्तावना, पृ.,12,13
2. डॉ. भगवतशरण अग्रवाल,'शाश्वतक्षितज',पृ.,31
3. स्नेह रश्मि, सनराइज ऑन स्नोपीक्स' पृ.,303
4. डॉ. भगवतशरण अग्रवाल 'शाश्वत क्षितज' पृ.,31
5. डॉ.शैल रस्तोगी, 'प्रतिबिंबित तुम' पृ.,25
6. डॉ. भगवतशरण अग्रवाल 'शाश्वतक्षितिज' पृ.,53
7. डॉ. वेदज्ञ आर्य 'हाइकु पत्र, मई 1979